

महावाणी – विश्वकल्याण की वाणी

२०/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरु जी को नमस्ते। परमात्मा गुरु जी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हो जाएँ... सभी अपना मूलस्वरूप देखें... एक चमकता हुआ लाइट का सितारा... अपने सिंहासन पर विराजमान... अपनी मूलस्वरूप अवस्था में स्थित है... देखिए अपना मूलस्वरूप... इसे गहराई से अनुभव करें...

संगम युग में सबसे अगर मुख्य ज्ञान कोई होगा, तो सिर्फ वह यह है मूलस्वरूप का ज्ञान, स्वयं के मूलस्वरूप की पहचान। हर आत्मा को संगम में सबसे पहले अपने आप को जानना ज़रूरी है, अपनी रियल पहचान लेना ज़रूरी है; क्योंकि कलियुग में आप जो जीते हो, वह सारे आपके मायावी अस्तित्व जीते हैं। संगम युग में आपको आपके सत्य स्वरूप का ज्ञान प्राप्त हो जाता है, साथ में सभी मायावी अस्तित्वों का भी ज्ञान मिल जाता है। इस ही संगम युग में देह सहित, देह के सभी सम्बन्धों को भूलना होता है; क्योंकि बाकी सभी युगों में आत्मा ने सभी के साथ अपने-अपने हर जन्म में सम्बन्ध-रिश्ते बनाए हैं। पर सिर्फ संगम पर ही आत्मा को अपने कल्याण अर्थ, अपने पूर्ण परिवर्तन अर्थ, देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूलना ही होगा। अगर बुद्धि में किसी को भी याद रखा जो संसारी है, जो मायावी है, जो आत्मा के कल्याण का नहीं है, इन सबसे बुद्धि पूर्ण रूप से अशुद्ध हो जाएगी।

संगम पर ही बुद्धि को सम्पूर्ण शुद्ध करना होगा। बुद्धि को शुद्ध करने के लिए अब तक जो भी पढ़ा-लिखा है, उसे भूलना होगा। अब तक की जो भी आपकी मान्यताएँ बनी होगी संसार में चलते वह सभी मान्यताओं को सम्पूर्ण रूप से काटना होगा, उसकी विस्मृति करनी होगी। बुद्धि को शुद्ध बनाना ही होगा, क्योंकि जब तक बुद्धि में कचरा होगा, तब तक आत्मा अपने मूलस्वरूप में नहीं आएगी।

एक होती है ज्ञान की समझ लेना कि, "मैं सत्य में आत्मा हूँ और मैं आत्मा इस समय संगम पर पार्ट बजा रही हूँ।" तो इस समय में मुझे आत्मा का क्या कर्तव्य है, मेरे प्रति यह समझ लेना आवश्यक है। बुद्धि से ही सभी कर्म-बन्धनों को काटना है, और यह तब ही कट जाएँगे जब दिल से यह रियलाइज़ होगा कि, "मैं सच में आत्मा हूँ और मुझे मेरा कल्याण करना है इस ही समय में।" जब तक कोई आत्मा यह समझ खुद से ना उठाए, तब तक किसी भी प्रकार के बुद्धि के बंधन नहीं कटेंगे।

आपको किसी ने कितनी भी शक्ति दी, ताकत दी, या किसी ने आपको कितना भी समझाया, परन्तु जब तक आप खुद से खुद नहीं समझ पाते, तब तक वह बात आपकी कभी भी नहीं हट सकती; क्योंकि जब आत्मा खुद से समझ जाती है, तब उसे कोई कभी भी रोक नहीं सकता उसके कल्याण के मार्ग के लिए। पर यह समझ सभी आत्माओं को खुद से लेनी होगी। कोई परिस्थिति आपको समझ दे, कोई प्रकृति की हलचल आपको समझ दे, या समय आपको समझ दे - इससे कभी भी आत्मा का पूर्ण कल्याण नहीं हो सकता; क्योंकि आत्मा को कल्याण कराने के पीछे कोई आधार बना।

संपूर्ण कल्याण उन्हीं अस्तित्वों का होगा, जो हर बात की समझ खुद से लेते जाएँगे। परमात्मा तो ज्ञान प्रदान कर रहे हैं, शिक्षाएं दे रहे हैं, हर बात की समझानी दे रहे हैं; किन्तु हर किसी को वह अपने से उठानी होगी। वह समझ अपने से धारण करनी होगी। हर किसी को अपने से यह लगना चाहिए कि - यह तो मुझे नहीं करना चाहिए, जो परमात्मा कह रहे हैं, यही मेरे कल्याण का है, मेरा कल्याण इसमें ही है। जब तक किसी आत्मा को, किसी अस्तित्व को यह समझ खुद से नहीं मिलती, तब तक वह अस्तित्व कभी भी पूर्ण रूप से परिवर्तन नहीं होगा।

परमात्मा की जो बेहद रचना है, वह हर रचना संपूर्ण स्वतंत्र है; इस रचना में कभी भी कोई भी, किसी के ऊपर भी, किसी भी प्रकार का कोई दबाव नहीं डालता। हर किसी की अपनी मर्जी होती है कि उसको किस प्रकार चलना है। हर किसी के लिए नियम बने हैं, हर किसी के लिए लिमिटेशंस लगाए हैं; फिर भी कोई अगर कोई नियमों का या कोई धारणाओं का उल्लंघन करते हैं, तो उनके लिए भी सजाएं तैयार रहती हैं। इसलिए हर किसी को खुद से हर बात की समझ लेनी होगी।

इसलिए, समझ लेने के लिए अपनी बुद्धि को शुद्ध करना होगा। जितना जितना ज्ञान को समझते जाएंगे, उतना-उतना बुद्धि का कचरा हटता जाएगा। बुद्धि से ही कर्म बंधन, कर्म संबंध हटते जाएंगे और बुद्धि शुद्ध होती जाएगी; और जैसे-जैसे समझ बढ़ती जाएगी बुद्धि की पात्रता बढ़ती जाएगी और आत्मा को अपनी मूल अवस्था में स्थित होने के लिए बुद्धि की भी मदद मिल जाएगी।

एक है ज्ञान के द्वारा खुद से समझ उठाना, दूसरा है मूलस्वरूप का अभ्यास करते जाना। फिर उसमें मन के कोई विचार भी चलें, या उस समय बुद्धि से कोई व्हिजन भी दिखें, या किसी भी प्रकार के संस्कार इमर्ज हो जाएँ, पर वह सब बाहरी है। इस पर ध्यान ना देते हुए, मूलस्वरूप के अभ्यास में तत्पर रहना, करते जाना अभ्यास। कुछ भी हो जाए, उसे नहीं छोड़ना; फिर शरीर की भूख, प्यास हो, नींद हो, बाहरी कोई व्यवस्था हो। एक है आत्मा अपनी ज़िद से, मूलस्वरूप के अभ्यास में, बैठती जाए, बैठती जाए, बैठती जाए। उसी से उसके सूक्ष्म कर्मेन्द्रियाँ, जो मन, बुद्धि और संस्कार हैं, वो शुद्ध होते जाएंगे। यह एक ज़िद है, जो आत्मा ने खुद से अपनी मूलस्वरूप अवस्था को पाने के लिए एक निश्चय किया और उसका अभ्यास करने के लिए वो तत्पर रही, और दूसरा है बुद्धि की शुद्धि—ज्ञान की समझ से बुद्धि की शुद्धि करते जाना। इन दोनों ही प्रोसेस से, बहुत जल्दी आत्मा अपने मूलस्वरूप अवस्था में, जो कि सहज अवस्था है, उस अवस्था को उपलब्ध हो जाएगी।

बुद्धि के अंदर सभी जन्मों की सारी रिकॉर्डिंग पड़ी है। यहाँ तक कि हर जन्म, जहाँ से लौकिक में शिक्षाएँ उठाई हैं, पढ़ाई पढ़ी है, कुछ कहाँ से सीखा है—हर प्रकार का ज्ञान बुद्धि में पड़ा है। पर जब संगम पर स्वयं का सत्य ज्ञान परमात्मा से मिलता है, उस समय जो कुछ भी पढ़ा-लिखा है, उसे त्यागना होगा; क्योंकि संगम पर आत्मा को स्वयं का सत्य ज्ञान मिलता है और हर प्रकार से ड्रामा का भी सत्य ज्ञान मिलता है। इसलिए कभी भी कोई भी अपनी किसी भी प्रकार की मान्यताओं में अटको नहीं। अगर कभी भी आपको आपकी कोई मान्यताएँ सही लगती हैं, तो समझ लेना आपका एक कॉन्सिडरेशन वहाँ अटक चुका है और इतना स्ट्रांग हो चुका है कि वह आप जो आत्मा हैं, उसका भी सुन नहीं रहा है।

अब तक बुद्धि ने जो-जो पकड़ा है, वो सारा पकड़कर रखने वाले सभी आप ही के कॉन्ससियसनेस्स हैं। जैसे-जैसे बुद्धि शुद्ध होती जाएगी, जो-जो बातें बुद्धि ने पकड़ के रखी हैं, वो सभी बातें जैसे वो छोड़ती जाएगी, भूलती जाएगी, वैसे-वैसे आपके जो अनेक कॉन्ससियसनेस्स बन गए थे, वह भी सारे मुक्त होते जाएंगे और आप आपके सत्य स्वरूप, मूलस्वरूप में आते जाएंगे। आपकी हर एक बीलीफ सिस्टम, वहाँ पर आपका एक कॉन्ससियसनेस्स बन गया है। आपकी हर एक जो बाहरी धारणाएँ हैं - जो कि परमात्मा ने नहीं सिखाई हैं, फिर वह किसी भी प्रकार की हों: उठना हो, बैठना हो, शरीर को भोजन खिलाना हो, चलना हो, किसी से व्यवहार करना हो, कर्म करने हों - आपकी हर एक बात में आपके कॉन्ससियसनेस्स पड़े हैं।

इसलिए संगम पर परमात्मा की श्रीमत अनुसार चलना होता है। वह जहाँ बिठाए, जैसे बिठाए, जो खिलाए, जब खिलाए, जहाँ सुलाए, जब सुलाए, हर बात के लिए सदा राजी-खुशी रहकर वह करना; उसी से ही आपके पुराने सारे, एक-एक कॉन्ससियसनेस्स मुक्त होता जाएगा, आपकी बुद्धि उसी से ही शुद्ध होती जाएगी। क्योंकि आप जो करते आए हो या आपके किन्हीं जन्मों के संस्कारों वश अभी भी आप कर रहे हो, पर अगर आत्मा को अभी अगले कल्प में, सतयुग में अगर जाना है, तो उसको उसके पुराने सारे तौर-तरीके बदलने होंगे, सारे भूलने होंगे और परमात्मा की श्रीमत अनुसार, आज्ञा अनुसार, शिक्षाओं अनुसार देवताई तौर-तरीके धारण करने होंगे।

सतयुग में जाना माना सिर्फ पुराने संस्कारों का त्याग करना इतना ही नहीं है। सतयुग एक हाई-फ्रीक्वेंसी की, हाई ऊर्जा की वह एक दुनिया है जो परमात्मा रचते हैं। उस दुनिया में पार्ट बजाने को जाने के लिए आत्माओं को अपनी भी वह हाई ऊर्जा, हाई-फ्रीक्वेंसी बनानी होगी।

यहाँ पर जिस प्रकार से आप उठते हो, बैठते हो, व्यवहार करते हो, यह यहाँ की जो आपकी ऊर्जा है; क्या देवताएं भी, क्या देवताओं का भी उठना-बैठना, चाल-चलन किस प्रकार की ऊर्जा का होगा? क्या अभी के जो हमारे तौर-तरीके हैं - हर कोई अपने से चेक करना - अभी का जो मेरा हर प्रकार के कर्म करने का ढंग है, क्या वह देवताओं का कोई भी प्रकार के कर्म से, वह ढंग मैच हो सकता है?

अगर आत्माएं जाती हैं सतयुग में पार्ट बजाने, तो सबसे पहले आपको, सभी को - जिनको भी सतयुग में पार्ट बजाना है - उनको अपनी ऊर्जा सतयुग की ऊर्जा तक पहुँचानी होगी। आप उस स्थान पर तब ही पहुँच सकते हो जब उस स्थान की ऊर्जा आपकी ऊर्जा से मैच होती है। बिना ऊर्जा के कभी भी आपको कोई भी प्राप्ति नहीं हो सकती और ऊर्जा उठाने का एक ही मार्ग है, मूलस्वरूप, अपने सत्य स्वरूप में रहना, कोई कहते हैं, हमारे जीवन में सुख आए, पर सुख क्या है, सुख भी एक ऊर्जा है।

क्या इस समय आप आत्मा की वह स्थिति है, जिससे आपको सुख मिल जाए? आपको जीवन में जो कुछ भी चाहिए, फिर वो सुख हो, प्रेम हो, किसी से सम्मान हो, किसी से रहम हो, हर एक बात ऊर्जा है, और आत्मा जब अपने संपूर्ण मूलस्वरूप स्थिति में रहती है, तो आत्मा के पास ही, यह सभी गुणों की ऊर्जा सदा रहती है। उसको किसी से भी बाहर से मांगने की कभी भी ज़रूरत नहीं पड़ती।

किसी को सुख चाहिए, माना सुख की ऊर्जा चाहिए, वह क्यों लगता है। क्योंकि आत्मा उसकी मूलस्वरूप अवस्था में नहीं है। उसके कारण वह बाहर से उस बात की डिमांड कर रही है। इसी प्रकार से हर गुण और शक्ति के लिए है। जब जब आत्मा अपने मूलस्वरूप अवस्था में नहीं रहती तब तब आत्माएं बाहरी रूप से किसी ना किसी से कुछ ना कुछ सदैव मांगती रहती हैं। आत्मा की रचना संपूर्ण बेहद सुन्दर और शक्तिशाली है। आत्मा को कभी भी किसी से मांगने की दरकार नहीं पड़ती। पर यह कब? जब आत्मा अपने संपूर्ण स्थिति में रहती है। जितना जितना आत्माएं अपने मूलस्वरूप अवस्था में बैठती जाएगी, उतना उतना उनको अनुभव होता जाएगा, कि सारे सुख अपने पास ही है, सारी खुशियां अपने पास है, हर प्रकार के गुण अपने ही पास है। फिर आत्मा किसी भी रूप से बाहरी खुशी के लिए, मौज के लिए, आनंद के लिए किसी के ऊपर भी कभी भी निर्भर नहीं रहेगी। आत्मा की ऊर्जा कम होने के कारण उसको सारी चीजें बाहर से लगती हैं। पर जो स्वयं संपूर्ण है वह अपनी स्थिति में आ जाए तो उसको कभी भी किसी से बाहरी रूप से मांगना नहीं पड़ेगा बल्कि वो सदा दाता के स्वरूप में रहेगी। आत्मा से ही सभी को सुख, शांति, आनंद, सभी गुण शक्तियां प्राप्त होते जाएंगे, पर इसलिए आत्मा को अपने मूलस्वरूप में आना होगा।

हर कोई चेक करें, आपके पास जो कुछ भी है, फिर आपके पास आपका जो लौकिक घर हो, जो व्यवस्था हो, जिस भी प्रकार के वस्त्र हो, जिस भी प्रकार की व्यवस्थाएं हों, आपके रिश्ते जिस भी प्रकार से हैं, हर कुछ आप आत्मा की ऊर्जा के कारण हैं। अगर आप चाहते हो कि यह सब कुछ ठीक हो जाए, तो सबसे पहले आत्मा को अपने मूलस्वरूप में आना होगा। अपने स्थिति को ठीक करना होगा और यह सब कुछ बाहरी व्यवस्थाएं ठीक करने के लिए यह संगम युग नहीं है, यह सदा आत्मा स्मृति में रखे। यह मूलस्वरूप का ज्ञान जो इस समय पर मिल रहा है वह मुझ आत्मा के कल्याण के लिए है। इससे बाहरी परिस्थितियां तो ऐसे ही ठीक होती जाएंगी साथ ही साथ आत्मा के अपने कर्मबंधन, कर्मसंबंध कटते जाएंगे और आत्मा मुक्त होती जाएगी अपने कल्याण की यात्रा के लिए।

सभी प्रकार के समस्याओं का समाधान है मूलस्वरूप स्थिति, जो की आत्मा की सहज अवस्था है।

तो आज के दिन में सभी आत्माएं चेक करें आपकी ऊर्जा कहां तक उठी है? क्या आप सतयुग में पार्ट बजाने के लिए पात्र बने हो? या आप त्रेता में पार्ट बजाने के लिए पात्र बने हो? या द्वापर में? या कलियुग में? कौन से युग तक आपकी ऊर्जा इस समय उठी है? पहुंची है? हर आत्मा अपने से चेक करें। और हर आत्मा अपने से निर्णय लें, कि उसको कौन से युग में पार्ट बजाना है और उस अनुसार आत्माओं को पुरुषार्थ करना होगा। अपने से किसी भी प्रकार से कभी कोई चमत्कार नहीं होगा क्योंकि यह यात्रा आत्माओं की अपनी अपनी है, यह मर्जी हर एक आत्मा की अपनी है। इसलिए हर कोई चेक करें आपकी ऊर्जा कहां तक पहुंची है?

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः